चाहिए तथा रोपण मुख्य वृक्ष प्रजातियों के नीचे/छायादार स्थल या नमी वाले खुले स्थान में किया जा सकता है।

रोपण के लगभग 5 वर्ष उपरांत इसके पत्तों का धारणीय विदोहन किया जा सकता है।

समयबद्ध कार्यक्रम

क0 स0	कार्य	वर्ष	माह
	वर्धी प्रजनन		
1	स्वस्थ पौधों का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ पौधों से कटिंग प्राप्त करना/लगाना	प्रथम वर्ष	जुलाई
3	रूटेड कटिंग का रूट ट्रेनर/थैली में प्रत्यारोण	द्वितीय वर्ष	मार्च
4	पौधों का रखरखाव	द्वितीय व तृतीय वर्ष	–
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई
	बीज द्वारा पौध तैयार करना		
1	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	अक्टूबर मध्य
2	शेड हाउस में बीज बुआई	प्रथम वर्ष	नवम्बर
3	अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण	द्वितीय वर्ष	जुलाई–अगस्त
4	पौधों का रखरखाव	द्वितीय व तृतीय वर्ष	–
5	रोपण कार्य	तृतीय वर्ष	जुलाई

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0– 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक , अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942–236270

अनुसंधान पत्रक 1/2013-14

केदारपाती
(Skimmia laureola)

पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

केदारपाती
(Skimmia laureola)

परिचय

केदारपाती एक सदाबहार छोटी झाड़ी प्रजाति है जिसकी ऊंचाई लगभग 1.5 मी0 तक होती है। यह सामान्यतः 2200 मीटर से 3500 मीटर की ऊँचाई पर उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाती है। यह सामान्यतया देवदार, फर, स्प्रूस आदि के वनों में झाड़ी के रुप में मृदा एवं जल संरक्षण में सहायक होने के साथ–साथ कस्तूरी मृग को भोजन व वास स्थल भी प्रदान करती है। इसका उपयोग सुगन्धित तेल, परफ्यूमरी तथा धूप उद्योग में किया जाता है। इस प्रजाति को सामान्यतः स्थानीय लोग नैरपाती, केदारपाती, कस्तूरी चारा भी कहते हैं। इसकी पत्तियों का उपयोग चेचक के उपचार में भी किया जाता है तथा वायुमण्डल को शुद्ध रखने में इसका विशेष महत्व है। इसके नर एवं मादा पौधे अलग–अलग पाये जाते हैं। इसमें पुष्पण अप्रैल—मई में तथा फल सितम्बर–अक्टूबर में परिपक्व होता है।

प्रवर्धन प्राविधि

केदारपाती का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)

- दो वर्ष पुरानी शाखा का चयन करें।
- शाखाओं के अग्र भाग से 15 सेमी0 की कटिंग जुलाई प्रथम सप्ताह में तैयार करें।
- कटिंग को आई0बी0ए0 3000 पी0पी0एम0 से उपचारित कर शेड हाउस में बालू में रोपित करें।
- कटिंग की जड़ प्रस्फुटित होने में 3–4 माह का समय लगता है तथा 70–75 प्रतिशत पौधों में रुटिंग प्राप्त होती है।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह मार्च में 300 सी0सी0 के रुट–ट्रेनर या 9"x6" के पॉलीबैग में करना चाहिए।
- प्रत्यारोपित पौध की देख रेख लगभग 12 माह तक करनी चाहिए जिससे पौध पूरी तरह विकसित हो जाय।
- लगभग 24 माह के उपरांत जुलाई में पौध रोपण किया जाना चाहिए।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम स्वस्थ व रोग मुक्त मादा पौधों का चयन किया जाता है तथा इन्हीं पौधों से माह अक्टूबर मध्य में परिपक्व फल एकत्र करते हैं। तत्पश्चात छिलका / गूदा हटाकर बीज साफ कर लेते हैं एवं कपड़े में लपेटकर भंडारित करते हैं। बीज की बुआई नवम्बर प्रथम सप्ताह में शेडनेट के अन्दर या छायादार स्थान पर लाईन में करते हैं। बीज का अंकुरण लगभग 5 माह पश्चात 10–15 अप्रैल के मध्य प्रारम्भ हो जाता है तथा जून अन्तिम सप्ताह तक बीज अंकुरित होते रहते हैं। उपरोक्तानुसार केदारपाती के बीज का अंकुरण 85 से 90 प्रतिशत प्राप्त किया जा सकता है।

पौध प्रत्यारोपण

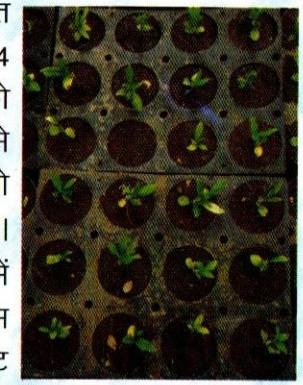

अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण जुलाई–अगस्त में किया जाना चाहिए जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियॉ आ जाय। प्रत्यारोपण हेतु पौधों को सावधानीपूर्वक जर्मीनेशन ट्रे या अंकुरण क्यारी से निकालना चाहिए तथा प्रत्यारोपण के समय पौधों को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। 300सी0सी0 के रूट–ट्रेनर एवं 9"x 6" के पॉलीबैग में प्रत्यारोपण शेड हाउस में करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है। पॉटिंग मीडियम मिट्टी व वर्मीकम्पोस्ट (2:1) के अनुपात में उपयुक्त पाया गया है। अगले वर्ष फरवरी–मार्च में पौधों को खुले स्थान में रखा जाना चाहिए तथा नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए। लगभग 20 माह के उपरांत पौध रोपण हेतु तैयार हो जाती है।

रोपण

वर्षाकाल के आरम्भ में 1 मी0 x 1 मी0 की दूरी पर रोपण किया जाना